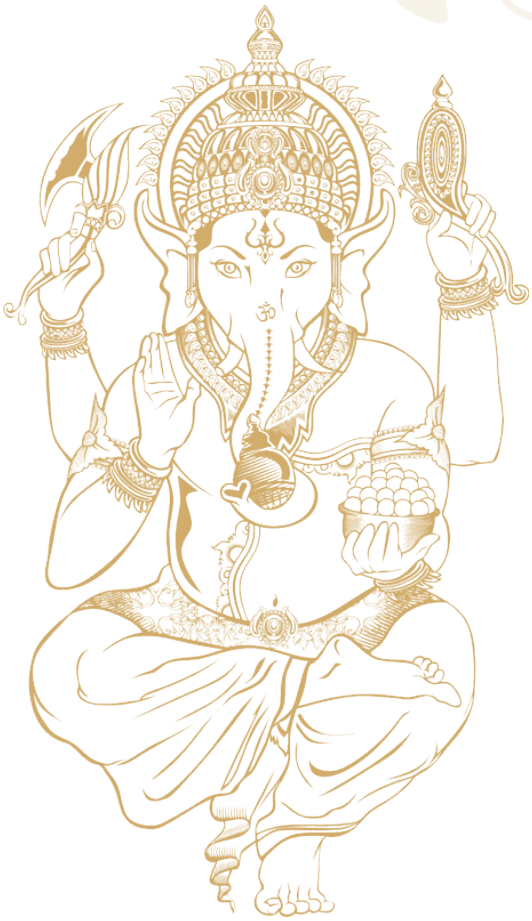

SHARSTHI GOUTAM

09 May 2010

11:30 AM

Jabalpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 120560901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**09/05/2010**
दिन	रविवार
जन्म समय	**11:30:00 घंटे**
इष्ट	14:53:48 घटी
स्थान	**Jabalpur**
राज्य	Madhya Pradesh
देश	India

अक्षांश	23:10:00 उत्तर
रेखांश	79:57:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:10:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	11:19:48 घंटे
वेलान्तर	00:03:33 घंटे
साम्पातिक काल	02:27:35 घंटे
सूर्योदय	05:32:28 घंटे
सूर्यास्त	18:41:12 घंटे
दिनमान	13:08:43 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्य के अंश	24:30:50 मेष
लग्न के अंश	18:02:10 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी	**कुम्भ - शनि**
नक्षत्र-चरण	**पू०भाद्रपद - 3**
नक्षत्र स्वामी	गुरु
योग	वैधृति
करण	बव
गण	मनुष्य
योनि	सिंह
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	दा-दामिनी
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृष

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1932	वैशाख	19
पंजाबी	संवत : 2067	वैशाख	26
बंगाली	सन् : 1417	वैशाख	25
तमिल	संवत : 2067	चिथिराई	26
केरल	कोल्लम : 1185	मेदम	26
नेपाली	संवत : 2067	वैशाख	26
चैत्रादि	संवत : 2067	वैशाख	कृष्ण 11
कार्तिकादि	संवत : 2067	वैशाख	कृष्ण 11

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 11
तिथि समाप्ति काल _____: 29:24:56
जन्म तिथि _____: 11
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 21:45:37 घंटे
जन्म योग _____: पू०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग ____: वैधृति
योग समाप्ति काल _____: 24:55:40 घंटे
जन्म योग _____: वैधृति
सूर्योदय कालीन करण ____: बव
करण समाप्ति काल _____: 16:36:29 घंटे
जन्म करण _____: बव
भयात _____: 40:32:28
भभोग _____: 66:11:31
भोग्य दशा काल _____: गुरु 6 वर्ष 2 मा 24 दि

घात चक्र

मास _____: चैत्र
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: आर्द्रा
योग _____: गण्ड
करण _____: किंस्तुघ्न
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: मिथुन
सूर्य _____: वृष
चन्द्र _____: मिथुन
मंगल _____: मिथुन
बुध _____: वृष
गुरु _____: कर्क
शुक्र _____: सिंह
शनि _____: मेष
राहु _____: कन्या

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

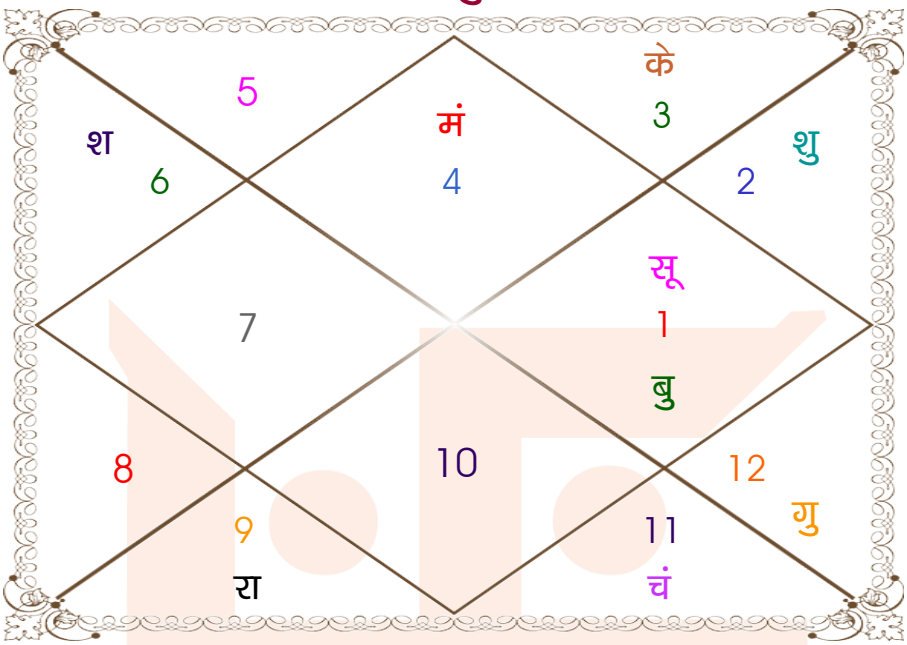

चन्द्र कुंडली

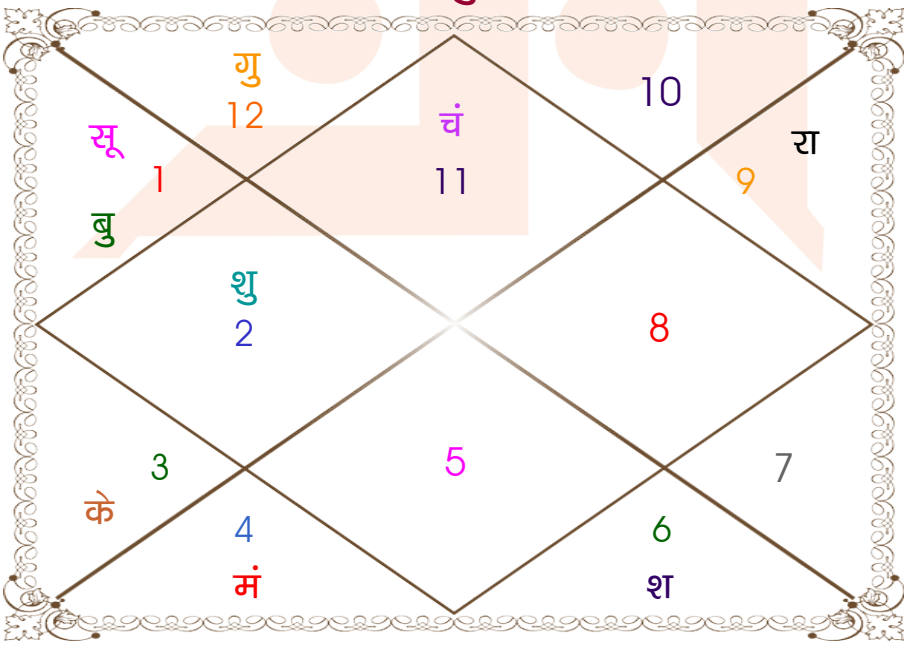

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

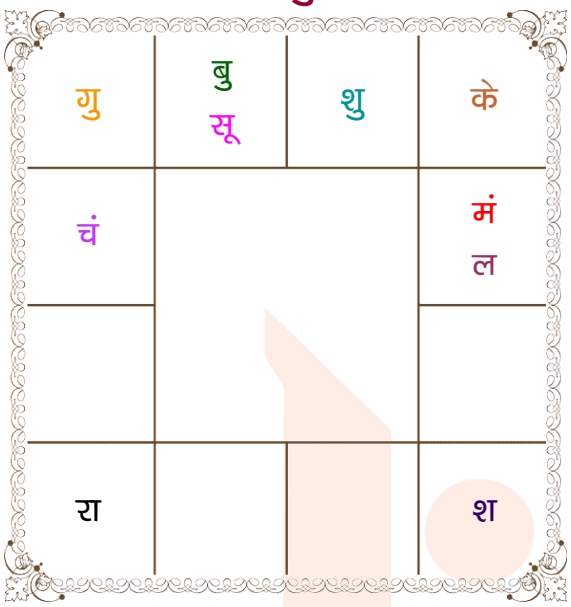

लग्न कुंडली

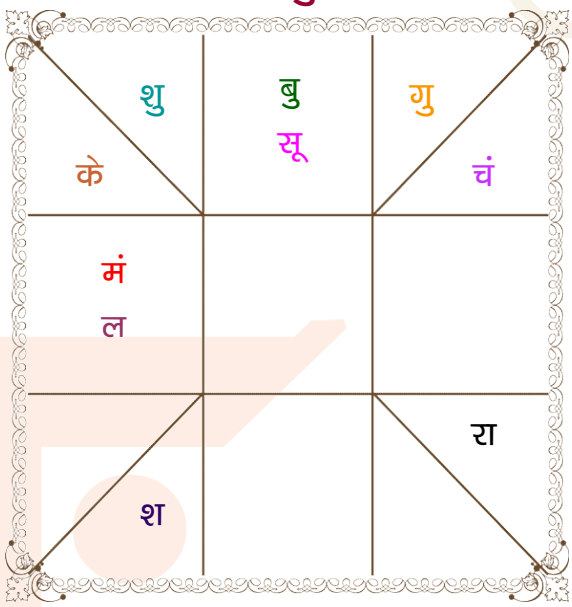

विंशोत्तरी
गुरु 6वर्ष 2मा 24दि

गुरु

09/05/2010

03/08/2120

गुरु	02/08/2016
शनि	03/08/2035
बुध	02/08/2052
केतु	03/08/2059
शुक्र	03/08/2079
सूर्य	02/08/2085
चन्द्र	03/08/2095
मंगल	04/08/2102
राहु	03/08/2120

योगिनी
भ्रामरी 1वर्ष 6मा 21दि

सिद्धा

29/11/2022

29/11/2029

सिद्धा	09/04/2024
संकटा	29/10/2025
मंगला	08/01/2026
पिंगला	30/05/2026
धान्या	29/12/2026
भ्रामरी	10/10/2027
भद्रिका	29/09/2028
उल्का	29/11/2029

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	18:02:10	317:31:01	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	---
सूर्य			मेष	24:30:50	00:58:02	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	बुध	उच्च राशि
चंद्र			कुंभ	28:08:17	12:06:27	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	सम राशि
मंगल			कर्क	21:58:43	00:26:17	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	सूर्य	नीच राशि
बुध	व	अ	मेष	08:55:55	00:12:22	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	सम राशि
गुरु			मीन	01:23:23	00:11:22	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	स्वराशि
शुक्र			वृष	23:00:39	01:12:25	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	सूर्य	स्वराशि
शनि	व		कन्या	04:12:57	00:02:08	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	मित्र राशि
राहु	व		धनु	19:36:50	00:06:03	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	नीच राशि
केतु	व		मिथु	19:36:50	00:06:03	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	मंगल	नीच राशि
हर्ष			मीन	05:18:57	00:02:30	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	---
नेप			कुंभ	04:33:32	00:00:44	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	शुक्र	---
प्लूटो	व		धनु	11:09:22	00:00:55	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	---
दशम भाव			मेष	15:17:24	--	भरणी	--	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:00:21

लग्न-चलित

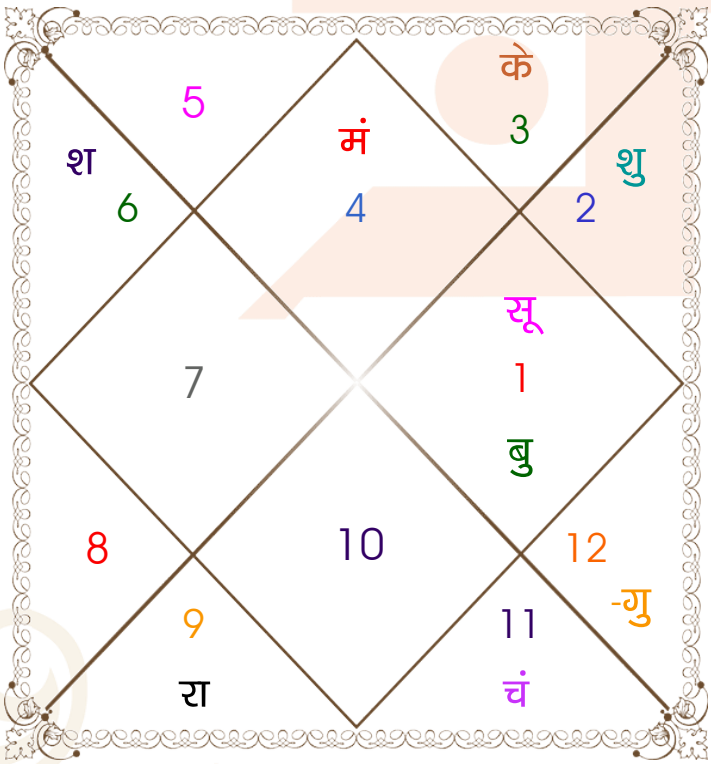

चन्द्र कुंडली

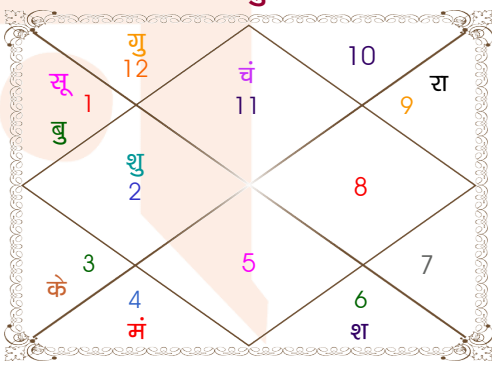

नवमांश कुंडली

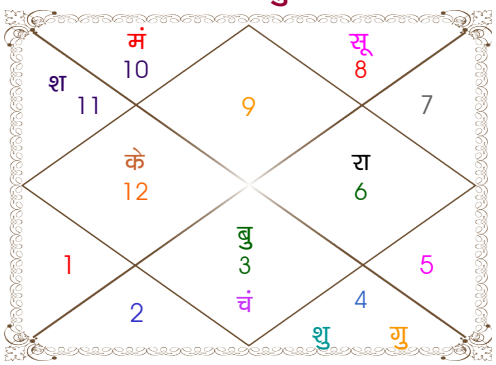

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश

9827998836,9425878602

astrosandeep90@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कर्क	02:34:43	कर्क	18:02:10
2	सिंह	02:34:43	सिंह	17:07:15
3	कन्या	01:39:47	कन्या	16:12:20
4	तुला	00:44:52	तुला	15:17:24
5	वृश्चिक	00:44:52	वृश्चिक	16:12:20
6	धनु	01:39:47	धनु	17:07:15
7	मकर	02:34:43	मकर	18:02:10
8	कुम्भ	02:34:43	कुम्भ	17:07:15
9	मीन	01:39:47	मीन	16:12:20
10	मेष	00:44:52	मेष	15:17:24
11	वृष	00:44:52	वृष	16:12:20
12	मिथुन	01:39:47	मिथुन	17:07:15

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	18:02:10
2	सिंह	13:42:45
3	कन्या	13:04:21
4	तुला	15:17:24
5	वृश्चिक	17:45:51
6	धनु	18:42:44
7	मकर	18:02:10
8	कुम्भ	13:42:45
9	मीन	13:04:21
10	मेष	15:17:24
11	वृष	17:45:51
12	मिथुन	18:42:44

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा

चलित कुंडली

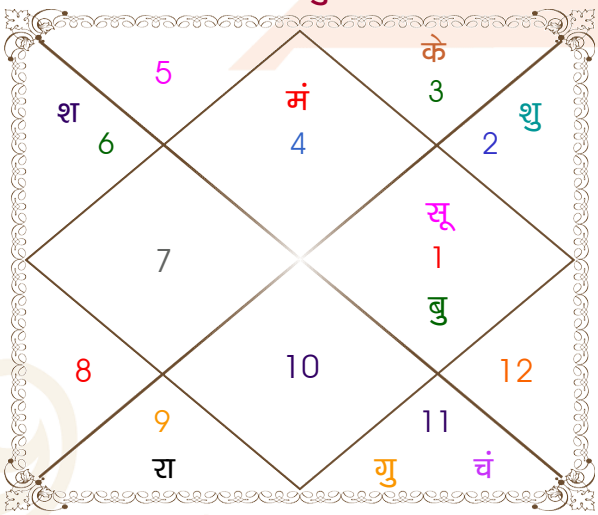

भाव कुंडली

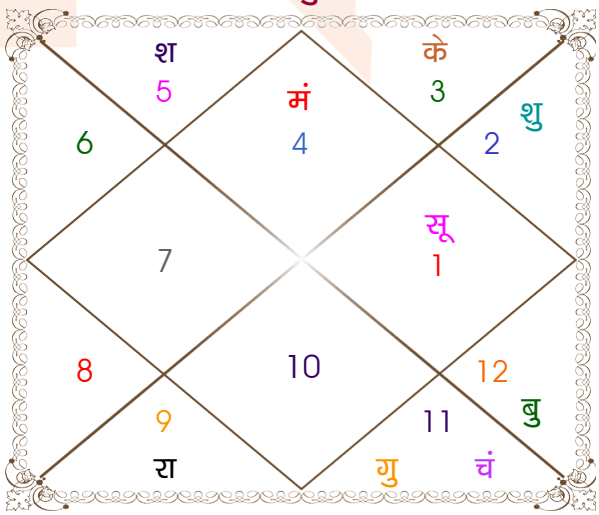

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 6 वर्ष 2 मास 24 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
09/05/2010		02/08/2016		03/08/2035		02/08/2052		03/08/2059	
02/08/2016		03/08/2035		02/08/2052		03/08/2059		03/08/2079	
	00/00/0000	शनि	06/08/2019	बुध	29/12/2037	केतु	29/12/2052	शुक्र	02/12/2062
	00/00/0000	बुध	15/04/2022	केतु	27/12/2038	शुक्र	28/02/2054	सूर्य	03/12/2063
	00/00/0000	केतु	25/05/2023	शुक्र	27/10/2041	सूर्य	06/07/2054	चंद्र	02/08/2065
	09/05/2010	शुक्र	24/07/2026	सूर्य	02/09/2042	चंद्र	04/02/2055	मंगल	02/10/2066
शुक्र	13/02/2011	सूर्य	06/07/2027	चंद्र	01/02/2044	मंगल	03/07/2055	राहु	02/10/2069
सूर्य	03/12/2011	चंद्र	04/02/2029	मंगल	29/01/2045	राहु	21/07/2056	गुरु	02/06/2072
चंद्र	03/04/2013	मंगल	16/03/2030	राहु	18/08/2047	गुरु	27/06/2057	शनि	03/08/2075
मंगल	09/03/2014	राहु	19/01/2033	गुरु	23/11/2049	शनि	06/08/2058	बुध	03/06/2078
राहु	02/08/2016	गुरु	03/08/2035	शनि	02/08/2052	बुध	03/08/2059	केतु	03/08/2079

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
03/08/2079		02/08/2085		03/08/2095		04/08/2102		03/08/2120	
02/08/2085		03/08/2095		04/08/2102		03/08/2120		00/00/0000	
सूर्य	20/11/2079	चंद्र	03/06/2086	मंगल	30/12/2095	राहु	16/04/2105	गुरु	21/09/2122
चंद्र	21/05/2080	मंगल	02/01/2087	राहु	16/01/2097	गुरु	09/09/2107	शनि	04/04/2125
मंगल	26/09/2080	राहु	03/07/2088	गुरु	23/12/2097	शनि	16/07/2110	बुध	10/07/2127
राहु	21/08/2081	गुरु	02/11/2089	शनि	01/02/2099	बुध	02/02/2113	केतु	15/06/2128
गुरु	09/06/2082	शनि	03/06/2091	बुध	29/01/2100	केतु	20/02/2114	शुक्र	10/05/2130
शनि	22/05/2083	बुध	01/11/2092	केतु	28/06/2100	शुक्र	20/02/2117		00/00/0000
बुध	27/03/2084	केतु	02/06/2093	शुक्र	28/08/2101	सूर्य	15/01/2118		00/00/0000
केतु	02/08/2084	शुक्र	01/02/2095	सूर्य	02/01/2102	चंद्र	17/07/2119		00/00/0000
शुक्र	02/08/2085	सूर्य	03/08/2095	चंद्र	04/08/2102	मंगल	03/08/2120		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 6 वर्ष 2 मा 12 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
25/05/2023		24/07/2026		06/07/2027		04/02/2029		16/03/2030	
24/07/2026		06/07/2027		04/02/2029		16/03/2030		19/01/2033	
शुक्र	04/12/2023	सूर्य	11/08/2026	चंद्र	24/08/2027	मंगल	27/02/2029	राहु	19/08/2030
सूर्य	30/01/2024	चंद्र	09/09/2026	मंगल	26/09/2027	राहु	29/04/2029	गुरु	04/01/2031
चंद्र	06/05/2024	मंगल	29/09/2026	राहु	22/12/2027	गुरु	22/06/2029	शनि	18/06/2031
मंगल	12/07/2024	राहु	20/11/2026	गुरु	08/03/2028	शनि	25/08/2029	बुध	13/11/2031
राहु	02/01/2025	गुरु	05/01/2027	शनि	08/06/2028	बुध	21/10/2029	केतु	12/01/2032
गुरु	05/06/2025	शनि	01/03/2027	बुध	29/08/2028	केतु	14/11/2029	शुक्र	04/07/2032
शनि	05/12/2025	बुध	19/04/2027	केतु	01/10/2028	शुक्र	21/01/2030	सूर्य	25/08/2032
बुध	18/05/2026	केतु	10/05/2027	शुक्र	06/01/2029	सूर्य	10/02/2030	चंद्र	20/11/2032
केतु	24/07/2026	शुक्र	06/07/2027	सूर्य	04/02/2029	चंद्र	16/03/2030	मंगल	19/01/2033

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
19/01/2033		03/08/2035		29/12/2037		27/12/2038		27/10/2041	
03/08/2035		29/12/2037		27/12/2038		27/10/2041		02/09/2042	
गुरु	23/05/2033	बुध	05/12/2035	केतु	20/01/2038	शुक्र	17/06/2039	सूर्य	11/11/2041
शनि	16/10/2033	केतु	26/01/2036	शुक्र	21/03/2038	सूर्य	08/08/2039	चंद्र	07/12/2041
बुध	24/02/2034	शुक्र	20/06/2036	सूर्य	08/04/2038	चंद्र	02/11/2039	मंगल	25/12/2041
केतु	19/04/2034	सूर्य	03/08/2036	चंद्र	08/05/2038	मंगल	01/01/2040	राहु	10/02/2042
शुक्र	21/09/2034	चंद्र	16/10/2036	मंगल	29/05/2038	राहु	05/06/2040	गुरु	23/03/2042
सूर्य	06/11/2034	मंगल	06/12/2036	राहु	23/07/2038	गुरु	21/10/2040	शनि	11/05/2042
चंद्र	22/01/2035	राहु	17/04/2037	गुरु	09/09/2038	शनि	03/04/2041	बुध	24/06/2042
मंगल	17/03/2035	गुरु	12/08/2037	शनि	05/11/2038	बुध	27/08/2041	केतु	12/07/2042
राहु	03/08/2035	शनि	29/12/2037	बुध	27/12/2038	केतु	27/10/2041	शुक्र	02/09/2042

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
02/09/2042		01/02/2044		29/01/2045		18/08/2047		23/11/2049	
01/02/2044		29/01/2045		18/08/2047		23/11/2049		02/08/2052	
चंद्र	15/10/2042	मंगल	23/02/2044	राहु	17/06/2045	गुरु	06/12/2047	शनि	28/04/2050
मंगल	14/11/2042	राहु	17/04/2044	गुरु	20/10/2045	शनि	15/04/2048	बुध	14/09/2050
राहु	31/01/2043	गुरु	04/06/2044	शनि	16/03/2046	बुध	11/08/2048	केतु	10/11/2050
गुरु	10/04/2043	शनि	01/08/2044	बुध	26/07/2046	केतु	28/09/2048	शुक्र	23/04/2051
शनि	01/07/2043	बुध	21/09/2044	केतु	18/09/2046	शुक्र	13/02/2049	सूर्य	11/06/2051
बुध	12/09/2043	केतु	12/10/2044	शुक्र	20/02/2047	सूर्य	26/03/2049	चंद्र	01/09/2051
केतु	12/10/2043	शुक्र	11/12/2044	सूर्य	08/04/2047	चंद्र	03/06/2049	मंगल	28/10/2051
शुक्र	07/01/2044	सूर्य	29/12/2044	चंद्र	25/06/2047	मंगल	22/07/2049	राहु	24/03/2052
सूर्य	01/02/2044	चंद्र	29/01/2045	मंगल	18/08/2047	राहु	23/11/2049	गुरु	02/08/2052

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	8
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 8
शत्रु अंक	4, 5,
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	87%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति
माणिक्य	सूर्य	78%	व्यावसायिक उन्नति, धन
हीरा	शुक्र	67%	धनार्जन, सुख
मोती	चंद्र	56%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	44%	शत्रु व रोग, नेष्ट भाग्य
लहसुनिया	केतु	31%	व्यय, व्यावसायिक हानि
पन्ना	बुध	12%	व्यावसायिक हानि, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	0%	पराक्रम हानि, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना

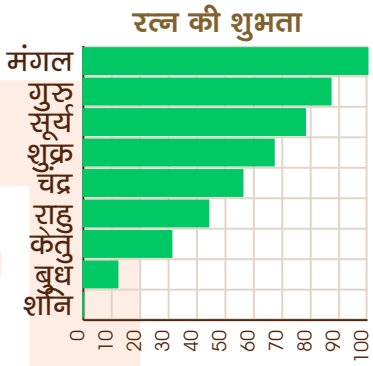

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	02/08/2016	84%	62%	100%	0%	100%	54%	0%	44%	31%
शनि	03/08/2035	66%	38%	94%	25%	87%	73%	9%	53%	6%
बुध	02/08/2052	84%	38%	100%	38%	87%	73%	0%	44%	31%
केतु	03/08/2059	66%	38%	100%	12%	87%	73%	0%	19%	53%
शुक्र	03/08/2079	66%	38%	100%	25%	87%	79%	0%	53%	44%
सूर्य	02/08/2085	91%	62%	100%	12%	93%	54%	0%	19%	6%
चंद्र	03/08/2095	84%	69%	100%	25%	87%	67%	0%	19%	6%
मंगल	04/08/2102	84%	62%	100%	0%	93%	67%	0%	19%	44%
राहु	03/08/2120	66%	38%	94%	12%	87%	73%	0%	59%	6%

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/05/2010-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगी तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगी। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपके पति का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगी। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। इसके प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी परंतु इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके । इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु जैसे अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगी तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको सर्वप्रकार से वे आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उनके द्वारा आपको विशेष धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रहेगा एवं उनका कहना मानने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। उनकी सेवा करना तथा वांछित सहयोग प्रदान करना आप अपना नैतिक कर्तव्य समझेंगी। आप के मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा फिर भी आपसी संबंध सामान्य ही समझें जाएंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आथिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराकमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्त्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ठग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ठगने वाला होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(02/08/2016 - 03/08/2035)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 02/08/2016 को आरम्भ और 03/08/2035 को समाप्त होगी।

शनि आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है। यह स्वभाव से एक अशुभ ग्रह है और फल की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा करता है। फल प्राप्ति की दिशा में यह जातक को कठिन परिश्रम के लिए प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है, किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है। अतः यह एक 'कार्मिक' ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि आपकी जन्मकुण्डली के पांचवें, नवें और बारहवें भाव पर है और इन भावों पर इसका प्रभाव है। तृतीय भाव, जिसमें यह स्थित है, मानसिक अभिरुचि, बुद्धि, साहस, पराक्रम, छोटी यात्रा, संप्रेषण, हाथ, गले, बाँह तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

साहस तथा पराक्रम के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि अपने भाव को शक्ति प्रदान करता है। इसलिए इस दशा के दौरान आप स्वयं को साहसी और बहादुर अनुभव करेंगे और आपको कोई गम्भीर बीमारी अथवा स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि तृतीय अर्थात साहस, बुद्धि और अभिरुचि के भाव में स्थित है। फलतः आपको चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके ऋणों का भुगतान होगा और आप आराम व विलास की वस्तुओं पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

बहादूर तथा साहसी होने के कारण आप तरंगी तथा निर्मम होंगे। आप स्थानीय बोर्ड, नगर निगम आदि के प्रधान या अध्यक्ष हो सकते हैं। आपको सफलता मिलने में कठिनाई होगी और लक्ष्य प्राप्ति में बाधाएं आएंगी।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम और सद्भाव पूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपका सहयोग करेंगे। किन्तु, आपके भाई-बहन समस्याएं और कठिनाइयाँ खड़ी करेंगे जिनका सामना आप साहसपूर्वक करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा तथा साहित्यिक वृत्ति के विकास के लिए दशा अनुकूल है।

अंर्तदशा :- शनि - शुक्र
(25/05/2023 - 24/07/2026)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 02/08/2016 को प्रारंभ होकर 03/08/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 25/05/2023 को प्रारंभ होकर 24/07/2026 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति। उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी खूब यात्राएं होंगी। इस कारण बहुत से व्यक्तियों से मित्रता होगी। मित्रों में महिलाएं भी होंगी। लोकप्रिय बनेंगे, खूब धन कमाएंगे। सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - सूर्य
(24/07/2026 - 06/07/2027)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 02/08/2016 को प्रारंभ होकर 03/08/2035 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 24/07/2026 को प्रारंभ होकर 06/07/2027 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके कार्यों में कुछ बाधाएं आएंगी मगर वाहन सुख, बुद्धिमत्ता, प्रसिद्धि और उच्चपद का संकेत है। पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। लोकप्रिय बनेंगे। संगीत में रुचि होगी। व्यक्तित्व आकर्षक होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शनि - चन्द्र
(06/07/2027 - 04/02/2029)

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 02/08/2016 को प्रारंभ होकर 03/08/2035 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। अष्टम भाव में स्थित होकर चंद्र आपकी कुंडली के दूसरे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। अष्टम भाव में स्थित चंद्र अशुभ माना जाता है।

इस अवधि में आप समाज में लोकप्रिय बनेंगे। विवाह के बाद व्यापार आदि में लाभ बढ़ेगा। जल से संबंधित रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। नदी, झील आदि के निकट सावधान रहें, क्योंकि डूबने का खतरा रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा का यंत्र धारण करें।

अंर्तदशा :- शनि - मंगल
(04/02/2029 - 16/03/2030)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 02/08/2016 को प्रारंभ होकर 03/08/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 04/02/2029 को प्रारंभ होकर 16/03/2030 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

इस अवधि में आप जल्दबाज, ऊर्जावान, साहसी और महत्वाकांक्षी होंगे मगर दुर्घटना का खतरा होगा। घरेलू जीवन में थोड़ी अशांति हो सकती है। आपके जीवनसाथी साहसी मगर क्रोधी स्वभाव के हो सकते हैं। आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आप मंगली हैं, अतः आपके जीवनसाथी भी मंगली हों, तो उत्तम रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन हनुमान मंदिर में जाएं और हनुमान चालीसा का पाठ करें।